राजनीतिक चेतना और जनवादी दृष्टिकोण: यज्ञदत्त शर्मा के कथा–साहित्य का विश्लेषण

हरदीप सिंह (शोधार्थी), डॉ० विकेश सिंह (शोध निदेशक), विभाग – हिन्दी विभाग,
श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनूं (राजस्थान)
ईमेल: hardeepc89@gmail.com

सारांश

यत्रुवा लेखक यात्रदेत शर्मा के रचनात्मक कार्य में राजनीतिक चेतना एवं जनवादी दृष्टिकोण का अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने अपने कहानियों में समाज में हो रहे अभिचार, गरीबी, पिछड़ावाद एवं राजनीतिक व्यवस्थाओं के अस्वीकार को तकनीकी आधार पर व्याख्यान देने की कोशिश की है। उन्होंने राजनीतिक लोकव्यवसायिक समस्याओं को समाज की संवाद की बात करते हुए लोगों में सत्य, अभिचार एवं परिवर्तन की चेतना उजागर की है। इस शोध–पत्र में यह विश्लेषण किया गया है कि शर्मा का रचनात्मक क्रम् एक ऐसे लेखक का प्रतीक है। जो नागरिक संवाद के माध्यम से समाज में आधुनिकता की आवश्यकता पर बल देते हुए राजनीतिक सत्यता का प्रतिक्रियात्मक विधायक बनाने की कोशिश करते हैं।

प्रमुख शब्द

यत्रुवा शर्मा, राजनीतिक चेतना, जनवादी दृष्टिकोण, समाजिक सत्यता, अभिचार, रचनात्मक परिप्रेक्ष्य, गरीबी, लोकव्यवसायिक समस्याएँ

1. भूमिका

भारतीय कथा–साहित्य में यज्ञदत्त शर्मा एक ऐसे प्रतिबद्ध लेखक के रूप में उभरे हैं, जिन्होंने अपने कथा–साहित्य में सामाजिक अन्याय, राजनीतिक विडंबनाओं और जनवादी चेतना को यथार्थपरक रूप से अभिव्यक्त किया है। उनकी कहानियाँ और उपन्यास समकालीन समाज के उस धरातल को छूते हैं जहाँ आमजन का संघर्ष, पीड़ा और व्यवस्था के प्रति आक्रोश जीवंत होकर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत होता है। उनके लेखन में केवल संवेदना या करुणा नहीं, बल्कि एक जागरूक चेतना, प्रतिरोध की शक्ति और परिवर्तन की आकांक्षा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

यज्ञदत्त शर्मा की कथा–यात्रा मात्र कल्पना या सौंदर्यानुभूति की भूमि पर आधारित नहीं है, बल्कि वह समाज के यथार्थ और यथासंभव संभावनाओं की खोज में सतत सक्रिय रही है। वे जीवन के उन कटु अनुभवों को कथ्य बनाते हैं जिन्हें बहुधा मुख्यधारा का साहित्य अनदेखा करता रहा है। उन्होंने वर्ग–संघर्ष, सामाजिक विषमता, जातिवाद, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, सत्ता के दमनचक्र और ग्रामीण–शहरी संघर्ष जैसे ज्वलंत मुद्दों को अपने लेखन में प्रमुखता से स्थान दिया है।

उनकी रचनाओं की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वे केवल समस्या का चित्रण नहीं करतीं, बल्कि उसमें छिपे संभावित विकल्पों की ओर भी संकेत करती हैं। उनके पात्र सामाजिक यथार्थ के प्रतिरूप होते हैंकृवे पीड़ित भी हैं और संघर्षशील भी। वे अन्याय को सहते नहीं बल्कि उसके विरुद्ध स्वर उठाते हैं, और यही उन्हें आम पाठक के अधिक निकट लाता है।

राजनीतिक चेतना उनके कथा–साहित्य में केवल एक पृष्ठभूमि नहीं बल्कि एक सक्रिय, आलोचनात्मक और निर्णायक उपस्थिति बन जाती है। वे व्यवस्था के खोखलेपन को न केवल उजागर करते हैं बल्कि उसमें परिवर्तन की जनवादी माँग को भी रेखांकित करते हैं। उनके साहित्य का फलक इतना व्यापक है कि वह स्थानीय घटनाओं से लेकर राष्ट्रीय स्तर की राजनीतिक धारणाओं और उनकी विफलताओं तक को समेट लेता है।

इस लेख का उद्देश्य यज्ञदत्त शर्मा के कथा–साहित्य में अंतर्निहित राजनीतिक दृष्टिकोण और जनवादी चेतना का समग्र विश्लेषण करना है। लेख में उनके कथा–संसार के उन पहलुओं को उजागर किया जाएगा जहाँ उनका लेखन सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनता है और जनसामान्य के संघर्षों को स्वर देता है। उनका साहित्य केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं बल्कि जनचेतना का एक सशक्त दस्तावेज बन जाता है।

2. यज्ञदत्त शर्मा का साहित्यिक परिदृश्य

यज्ञदत्त शर्मा हिंदी साहित्य के उन सशक्त रचनाकारों में अग्रणी हैं जिन्होंने अपने कथा–साहित्य के माध्यम से हाशिए पर खड़े समाज की आवाज को स्वर देने का कार्य किया है। उनका साहित्य मुख्यधारा की उस परंपरा का प्रतिनिधि है जो यथार्थ को आधार बनाकर जन–जीवन की विविध समस्याओं, संघर्षों और आकांक्षाओं को स्वर देती है। उनका लेखन महज मनोरंजन नहीं करता, बल्कि पाठकों को सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विमर्श के गंभीर धरातल पर ले जाता है।

उनकी कहानियों और उपन्यासों में जिस स्पष्टता से शोषण, वर्ग–संघर्ष, अन्याय और राजनीतिक अवसरवादिता का चित्रण मिलता है, वह उन्हें उन लेखकों की पंक्ति में खड़ा करता है जो साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का उपकरण मानते हैं। यज्ञदत्त शर्मा की शैली सहज, प्रभावशाली और संवेदनशील है। वे जटिल विचारों को भी आम जनमानस की भाषा में व्यक्त करते हैं, जिससे उनकी रचनाएँ लोकचेतना के अधिक निकट प्रतीत होती हैं।

साहित्यिक दृष्टि से उनका योगदान अनेक स्तरों पर महत्वपूर्ण है। एक ओर वे परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व को उजागर करते हैं, वहीं दूसरी ओर भारतीय लोकतंत्र की विसंगतियों को भी उनकी कहानियों में यथार्थपरक ढंग से उद्घाटित किया गया है। उनकी रचनाएँ न तो केवल वर्ग विशेष के लिए हैं, न ही किसी राजनीतिक विचारधारा का प्रचार करती हैंय बल्कि वे मनुष्य की गरिमा, अधिकार और सामाजिक न्याय के पक्ष में खड़ी होती हैं।

उनका साहित्य केवल एक विचारधारा तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उसमें कई स्तरों पर विचार, प्रश्न और समाधान देखने को मिलते हैं। वे न तो किसी वाद से बंधे हैं और न ही किसी आदर्शवादी कल्पना से। उनका रचनात्मक संसार जीवन की ठोस जमीन पर खड़ा है, जहाँ हर पात्र, हर परिस्थिति और हर संवाद सामाजिक यथार्थ से टकराता हुआ दिखाई देता है।

इस प्रकार, यज्ञदत्त शर्मा का साहित्यिक परिदृश्य भारतीय समाज की उन विसंगतियों, संघर्षों और आकांक्षाओं को उकेरता है जिन्हें अक्सर या तो उपेक्षित कर दिया जाता है या केवल भावनात्मक स्तर पर प्रस्तुत किया जाता है। वे अपने लेखन के माध्यम से पाठकों को सोचने, सवाल करने और व्यवस्था से टकराने के लिए प्रेरित करते हैं। यही उनकी रचनात्मकता की शक्ति और प्रासंगिकता है।

3. उनके कथा–साहित्य में राजनीतिक चेतना

यज्ञदत्त शर्मा का कथा–साहित्य केवल सामाजिक यथार्थ का चित्रण नहीं करता, बल्कि उसमें गहराई से राजनीतिक चेतना भी अंतर्निहित है। उनके कथा–पात्र, संवाद, घटनाएं तथा स्थितियाँ इस बात की साक्षी हैं कि वे व्यवस्था की विसंगतियों को केवल उजागर ही नहीं करते, बल्कि उन्हें सुधारने की जनचेतनात्मक मांग भी प्रस्तुत करते हैं। उनका लेखन सत्ता और जनता के बीच के द्वंद्व को उजागर करते हुए उस जनपक्षधर राजनीति की ओर संकेत करता है जो लोकतंत्र की असली आत्मा होनी चाहिए।

उनकी रचनाओं में राजनीति का स्वरूप केवल नीतियों और घोषणाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आम आदमी की जिंदगी पर पड़ने वाले प्रभावों तक फैला हुआ है। उन्होंने राजनीति के खोखले वादों, भ्रष्ट तंत्र, चुनावी अवसरवाद, नेताओं के दोहरे चरित्र और लोकलुभावन नारों को कटाक्ष के माध्यम से प्रकट किया है। उनके पात्र अक्सर ऐसे होते हैं जो किसी न किसी रूप में व्यवस्था की मार झेल रहे होते हैं, और इसी अनुभव से उनके भीतर एक गहन राजनीतिक समझ पैदा होती है।

विशेष रूप से यह देखा गया है कि उनकी कहानियाँ सत्ता और समाज के बीच तनाव, दमन और प्रतिरोध की प्रक्रियाओं को रेखांकित करती हैं। वे यह स्पष्ट करते हैं कि जब तक राजनीतिक व्यवस्था में आमजन की भागीदारी नहीं होगी, तब तक वास्तविक लोकतंत्र की स्थापना संभव नहीं है। उनके कथा–साहित्य में पाई जाने वाली राजनीतिक चेतना आदर्शवादी नहीं है, बल्कि वह व्यावहारिक अनुभवों से उपजी यथार्थवादी सोच का परिणाम है।

वे सत्ता के विरुद्ध एक सजग वैचारिक संघर्ष रचते हैं जो किसी पार्टी या दलविशेष के प्रति आकर्षण नहीं रखता, बल्कि जनहित को केंद्र में रखकर खड़ा होता है। उनकी कहानियों में राजनीति का सरोकार सामाजिक न्याय, समानता, और स्वतंत्रता जैसे मूल्यों से है, न कि सत्ता प्राप्ति की दौड़ से।

उनके कथा–साहित्य में राजनीतिक चेतना एक वैचारिक ढांचे की तरह नहीं, बल्कि जीवन की आवश्यकता के रूप में उभरती है। वह पाठक को न केवल सोचने पर विवश करती है, बल्कि उसे यह भी बताती है कि एक सजग नागरिक बनना कितना आवश्यक है। इस प्रकार, यज्ञदत्त शर्मा का कथा–साहित्य भारतीय राजनीति की असलियत को उजागर करता है और उसके विरुद्ध जन–चेतना को प्रेरित करता है।

4. जनवादी दृष्टिकोण का स्वर

यज्ञदत्त शर्मा के कथा–साहित्य में जनवादी दृष्टिकोण न केवल एक वैचारिक प्रवृत्ति है, बल्कि यह उनके लेखन का मूल स्वर है। उनका साहित्य शोषित, पीड़ित, उपेक्षित और हाशिए पर खड़े वर्गों की आकांक्षाओं, संघर्षों और अधिकारों की सशक्त अभिव्यक्ति करता है। वे मानते हैं कि साहित्य का कार्य केवल सौंदर्यानुभूति या कल्पना का विस्तार नहीं है, बल्कि उसका सबसे बड़ा दायित्व है – समाज की सच्चाई को सामने लाना और परिवर्तन की चेतना को जागृत करना।

उनकी कहानियाँ और उपन्यास आमजन की व्यथा–कथा को लेकर चलते हैं। उनकी दृष्टि ग्रामीण भारत के गरीब किसान, मजदूर, स्त्रियाँ, दलित, बेरोजगार युवा, और उन सभी वंचित वर्गों पर केंद्रित होती है जिनकी आवाज अक्सर सामाजिक और राजनीतिक विमर्श में अनसुनी रह जाती है। शर्मा उनके जीवन के छोटे–छोटे अनुभवों, संघर्षों और स्वाभिमान को अपने साहित्य में इस प्रकार पिरोते हैं कि पाठक उससे सीधे जुड़ जाता है।

उनका जनवादी दृष्टिकोण केवल विषय–वस्तु तक सीमित नहीं है, बल्कि उनकी भाषा, शैली, संवाद, और प्रतीकों में भी जनसामान्य की आत्मा बसती है। वे आम जनता की बोलचाल की भाषा में गंभीर से गंभीर मुद्दों को उठाते हैं। उनके पात्र किसी काल्पनिक संसार के नहीं बल्कि हमारी ही सामाजिक–संरचना के भीतर जीते–जागते इंसान होते हैं, जो अपमान, असमानता, भूख, दमन और शोषण के विरुद्ध उठ खड़े होते हैं।

यज्ञदत्त शर्मा यह स्वीकारते हैं कि समाज में जब तक समानता, न्याय और गरिमा सुनिश्चित नहीं होती, तब तक कोई भी साहित्य जनसरोकारों से जुड़ा नहीं माना जा सकता। यही कारण है कि उनके साहित्य में वर्ग–संघर्ष, भूमिहीनता, स्त्री–विमर्श, और जातीय विषमता जैसे प्रश्नों पर खुलकर विमर्श होता है। उनका लेखन न तो निष्क्रिय करुणा की माँग करता है और न ही केवल क्रांति की घोषणा करता है – वह तो संघर्ष की प्रक्रिया को वास्तविक जमीन पर उतारता है।

इस प्रकार, यज्ञदत्त शर्मा का जनवादी दृष्टिकोण उनकी रचनात्मक चेतना का अभिन्न अंग है। वे साहित्य को समाज परिवर्तन का औजार मानते हैं और इसी उद्देश्य से अपने लेखन में जनता की पीड़ा को न केवल उजागर करते हैं, बल्कि उसमें आवाज और ऊर्जा भी भरते हैं। उनकी कहानियाँ पाठकों को यह महसूस कराती हैं कि बदलाव केवल बाहर से नहीं आता, बल्कि वह अंदर से शुरू होता है – विचार से, संवेदना से, और लेखकीय प्रतिबद्धता से।

5. कथाओं का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

यज्ञदत्त शर्मा के कथा–साहित्य का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट रूप से सामने आता है कि उनकी रचनाएँ केवल भावनात्मक संवेदना नहीं, बल्कि समाज के ठोस यथार्थ की वैज्ञानिक समझ को भी उद्घाटित करती हैं। वे समाज के उस पक्ष को उजागर करते हैं जो हाशिए पर है, शोषण और असमानता से पीड़ित है और जिसे तथाकथित मुख्यधारा का साहित्य प्रायः उपेक्षित करता रहा है। उनका साहित्य वर्ग–संघर्ष, जातिगत असमानता, लैंगिक भेदभाव, ग्रामीण–शहरी विभाजन, आर्थिक विषमता और राजनीतिक भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों को न केवल उजागर करता है बल्कि उसके समाजशास्त्रीय संदर्भों को भी गहराई से प्रस्तुत करता है।

यज्ञदत्त शर्मा के पात्र एक विशिष्ट सामाजिक संरचना के प्रतिनिधि होते हैं। वे अमूर्त या प्रतीकात्मक नहीं, बल्कि ठोस ऐतिहासिक और सामाजिक सन्दर्भों में जीते–जागते इंसान होते हैं। उनकी कहानियों में ग्रामीण समाज की जटिलताएँ, सामंती ढाँचों की पकड़, जातीय पदानुक्रम की स्थायित्वशीलता और स्त्री की दोहरी पीड़ा जैसे विषयों को विशेष गहराई से प्रस्तुत किया गया है। वे दिखाते हैं कि किस प्रकार शिक्षा, स्वास्थ्य, भूमि अधिकार, और रोजगार जैसे बुनियादी संसाधनों की अनुपलब्धता समाज के एक बड़े वर्ग को विकास की मुख्यधारा से बाहर कर देती है। उनके पात्र इसी सामाजिक संरचना से जूझते हैं, कभी प्रतिरोध करते हैं, कभी सहन करते हैं और कभी उसका अतिक्रमण करने की कोशिश करते हैं।

शर्मा के कथा–साहित्य में परिवार संस्था का समाजशास्त्रीय विश्लेषण भी गहनता से मिलता है। उनके पात्र पारिवारिक बंधनों से तो बंधे होते हैं, लेकिन साथ ही उस परंपरा और पितृसत्तात्मक संरचना से भी टकराते हैं जो स्त्रियों को दोयम दर्जे की स्थिति में बनाए रखती है। उनके उपन्यासों में विवाह, जाति व्यवस्था, लैंगिक असमानता और सामूहिक चेतना जैसे विषय एक व्यापक सामाजिक विमर्श के रूप में सामने आते हैं। वे इस तथ्य को रेखांकित करते हैं कि समाज का ढाँचा केवल आर्थिक कारकों से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, धार्मिक और नैतिक मूल्य–बोधों से भी संचालित होता है।

यज्ञदत्त शर्मा के पात्रों की भाषा, सोच और व्यवहार में जो विविधता मिलती है, वह उनके समाजशास्त्रीय अध्ययन की गहराई का प्रमाण है। उनकी रचनाओं में सामाजिक गतिशीलता, वर्गीय चढ़ाव–उतार, धार्मिक रूढ़ियाँ, ग्रामीण राजनीति और सामाजिक हिंसा जैसे तत्व कथा–वस्तु का हिस्सा बनते हैं, जिससे उनकी कहानियाँ केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि समाज के संरचनात्मक विश्लेषण की मिसाल बन जाती हैं। पाठक उनके साहित्य से न केवल भावनात्मक रूप से जुड़ता है, बल्कि उसे सामाजिक सच्चाइयों की गहन समझ भी प्राप्त होती है।

इस प्रकार, यज्ञदत्त शर्मा का कथा–साहित्य समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अत्यंत समृद्ध है। यह साहित्य केवल मनोरंजन या वैचारिक प्रवचन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना, वर्गीय संघर्ष, और परिवर्तन की आकांक्षा का एक प्रामाणिक स्रोत बनकर उभरता है। उनकी रचनाओं को

पढ़ना एक प्रकार का समाजशास्त्रीय अन्वेषण है, जो यथार्थ की परतों को उघाड़ता है और पाठक को प्रश्न पूछने, सोचने और समाज से जुड़ने के लिए प्रेरित करता है।

6. लेखन की शैली और प्रभावशीलता

यज्ञदत्त शर्मा की लेखन शैली हिंदी कथा–साहित्य में एक जनोन्मुखी और यथार्थपरक प्रवृत्ति का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करती है। उनकी भाषा में एक ऐसी सादगी और प्रभावशीलता है जो सीधे पाठक के हृदय तक पहुँचती है। वे कठिन विचारों को सरल भाषा में प्रस्तुत करने में दक्ष हैं। उनकी लेखनी में न तो कृत्रिमता है और न ही बौद्धिक आडंबर। यही कारण है कि उनके पात्र जीवंत लगते हैं और पाठक उनके साथ जुड़ाव महसूस करता है। उनके संवाद संक्षिप्त होते हुए भी अर्थपूर्ण होते हैं और प्रत्येक शब्द के पीछे गहरी सामाजिक पीड़ा तथा चिंतन झलकता है।

उनकी शैली में गहरी सामाजिक समझ, मानवीय करुणा और वैचारिक स्पष्टता का समावेश होता है। वे घटनाओं का वर्णन इस प्रकार करते हैं कि पाठक को मानो वह दृश्य अपनी आँखों से देख रहा हो। पात्रों की मानसिकता, उनके संघर्ष, आकांक्षाएं और असमंजस को वे इतनी सजीवता से चित्रित करते हैं कि पाठक उनके दुख–सुख में शरीक हो जाता है। यह शैलीगत विशेषता उन्हें कथा साहित्य के उन रचनाकारों की श्रेणी में लाती है जो समाज और व्यक्ति के अंतरसंबंधों को सजीवता से प्रस्तुत करने में सफल हैं।

यज्ञदत्त शर्मा लोकभाषा, बोली और मुहावरों के प्रयोग से अपने साहित्य को जीवंत और स्थानीय बनाते हैं। वे भाषा को केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं मानते, बल्कि उसे एक वैचारिक औजार के रूप में उपयोग करते हैं। उनकी कहानियों में प्रयुक्त शब्दावली, पात्रों की बोली और उनका व्यवहार, उस समाज और परिवेश की सच्ची अभिव्यक्ति होती है जिससे वे आए हैं। इसी वजह से उनकी शैली पाठकों को अपने अनुभवों से जोड़ती है और उन्हें यथार्थ का साक्षात्कार कराती है।

उनकी लेखन में प्रचार या उपदेश नहीं होता, बल्कि चिंतन होता है। वे घटनाओं और पात्रों के माध्यम से पाठकों को सोचने पर विवश करते हैं। यह विशेषता उन्हें शिक्षाप्रद और विमर्शकारी लेखक बनाती है। वे साहित्य को केवल सौंदर्यबोध का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम मानते हैं। इसलिए उनकी लेखन शैली में एक अदृश्य क्रांतिकारी स्वर विद्यमान रहता है, जो हर कथा में पाठक को विचारशील बनाता है।

यज्ञदत्त शर्मा की शैली भावुकता और तर्क का संतुलन लिए होती है। वे न तो केवल भावनाओं में बहते हैं और न ही केवल तार्किक तर्कों में उलझते हैं। उनका साहित्य विचारशील पाठकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनता है। वे यथार्थ को केवल दर्शाते नहीं, बल्कि उससे मुठभेड़ भी कराते हैं। यही गुण उनकी लेखनी को प्रभावशील बनाता है।

7. आधुनिक सन्दर्भों में प्रासंगिकता

आज के बदलते सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में यज्ञदत्त शर्मा का कथा–साहित्य विशेष रूप से प्रासंगिक हो उठता है। जिस प्रकार से आज समाज में असमानता, जातिगत तनाव, स्त्री अस्मिता, बेरोजगारी, और लोकतांत्रिक मूल्यों का ह्रास देखा जा रहा है, उस संदर्भ में उनकी कहानियाँ समय की आवाज बनकर उभरती हैं। वे केवल साहित्य के लिए साहित्य नहीं रचते, बल्कि अपने समय, समाज और व्यवस्था के यथार्थ को उजागर करने के लिए लेखन करते हैं। उनकी कहानियों में जो विषय–वस्तु उठाई गई है – जैसे गरीबों का शोषण, स्त्रियों की दोहरी पीड़ा, राजनीतिक अवसरवाद, धर्म के नाम पर सामाजिक ध्रुवीकरण – वे आज भी हमारे समाज की सच्चाइयाँ हैं। ऐसे समय में, जब मीडिया और साहित्य दोनों ही कहीं न कहीं बाजारीकरण और प्रोपेगेंडा के प्रभाव में हैं, यज्ञदत्त शर्मा का लेखन हमें मूल्यपरक दृष्टिकोण और जनपक्षधर सोच की ओर वापस ले जाता है।

वर्तमान संदर्भ में उनकी कहानियों को पढ़ना एक नए प्रकार की सामाजिक चेतना को जन्म देता है। वे पाठकों को केवल मनोरंजन या ज्ञान नहीं देते, बल्कि उन्हें इस असमान, अन्यायपूर्ण और अपारदर्शी सामाजिक संरचना के विरुद्ध सोचने, समझने और प्रतिक्रिया देने के लिए प्रेरित करते हैं। उनका साहित्य पाठक को आत्ममंथन के लिए बाध्य करता है और यह बताता है कि साहित्य का कार्य केवल आनंद देना नहीं, बल्कि समाज में हस्तक्षेप करना भी है।

वह साहित्य जो आज के समाज की ज्वलंत समस्याओं से टकराता है और बदलाव के लिए मार्ग प्रशस्त करता है, वही कालजयी साहित्य कहलाता है – और यज्ञदत्त शर्मा की रचनाएँ इसी श्रेणी में आती हैं। इसलिए, उनका लेखन आज के पाठक के लिए एक वैचारिक उपकरण के रूप में कार्य करता है, जो उसे अपने समय की सच्चाइयों से न केवल अवगत कराता है, बल्कि उससे लड़ने की प्रेरणा भी देता है।

इस प्रकार, यज्ञदत्त शर्मा का कथा–साहित्य आज के सामाजिक और राजनीतिक परिवेश में केवल प्रासंगिक ही नहीं, अत्यंत आवश्यक बन गया है। यह वह साहित्य है जो समय से संवाद करता है और भविष्य की दिशा तय करने में मदद करता है।

8. निष्कर्ष

यज्ञदत्त शर्मा का कथा–साहित्य समकालीन हिंदी साहित्य में एक ऐसा सशक्त हस्तक्षेप है जो समाज की परतों को उघाड़ता है, सत्ता–संरचनाओं को प्रश्नांकित करता है और आमजन के संघर्ष, पीड़ा एवं आकांक्षाओं को गंभीरता से प्रस्तुत करता है। उनका लेखन केवल साहित्यिक कृतित्व नहीं, बल्कि एक सामाजिक अभियान है – ऐसा अभियान जो यथार्थ को उसकी सम्पूर्ण नग्नता में प्रस्तुत करता है और उसमें सुधार की संभावनाओं की खोज करता है।

उन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से समाज के उस हिस्से को स्वर देने का प्रयास किया है जो लंबे समय से हाशिए पर पड़ा हुआ था। स्त्री, दलित, किसान, मजदूर, बेरोजगार युवा – इन सभी की व्यथा को उन्होंने न केवल संवेदनशीलता के साथ, बल्कि गहन विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से चित्रित किया। उनका साहित्य इस मायने में विशिष्ट बन जाता है कि वह केवल समस्या नहीं दिखाता, बल्कि उसके समाधान की दिशा में भी संकेत करता है।

शर्मा का लेखन यथार्थ को केवल आलोचनात्मक निगाह से नहीं देखता, वह उसमें परिवर्तन की आकांक्षा भी पिरोता है। वे उस परिवर्तनकारी चेतना के वाहक हैं जो साहित्य को केवल सौंदर्य का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक क्रांति का औजार बनाती है। उनका लेखन पाठकों को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है – वे उनसे यह प्रश्न करवाते हैं कि 'क्या यही समाज हमें स्वीकार्य है?' और 'क्या हम इसमें बदलाव लाने को तैयार हैं?' यही संवाद उन्हें विशिष्ट बनाता है।

इस अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि यज्ञदत्त शर्मा का कथा–साहित्य न केवल पाठकों की संवेदनशीलता को जाग्रत करता है, बल्कि उनकी विवेकशीलता को भी समृद्ध करता है। वह साहित्य के जनवादी स्वरूप का उदाहरण है जो समाज के साथ खड़ा रहता है, उसे दिशा देता है और उसकी चेतना को गहराई देता है।

इसलिए यज्ञदत्त शर्मा की रचनाएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी उनके लेखन काल में थीं। वे आज के युग में भी समाज की जटिलताओं, विसंगतियों और संघर्षों को गहराई से समझने का मार्ग प्रशस्त करती हैं। उनका साहित्य केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि भविष्य की प्रेरणा भी है।

संदर्भ ग्रंथ

1. शर्मा, यज्ञदत्त. समय के सवाल और साहित्य. दिल्लीः राधाकृष्ण प्रकाशन, 1998.
2. त्रिपाठी, विमल. हिंदी कथा साहित्य में यथार्थवाद. प्रयागराजः भारतीय विद्या भवन, 2005.
3. वर्मा, रामेश. समकालीन हिंदी साहित्यः विचार और समीक्षा. दिल्लीरू साहित्य सदन, 2010.
4. मिश्र, निर्मला. स्त्री विमर्श और हिंदी कहानी. दिल्लीः वाणी प्रकाशन, 2012.
5. चतुर्वेदी, प्रवीण. दलित साहित्य की दिशा. पटनाः आधुनिक साहित्य संस्थान, 2008.
6. सिंह, उदय. कहानी में समाजशास्त्र. दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 2015.
7. तिवारी, मनोज. हिंदी कथा साहित्य का विकास. भोपालः लोकभारती प्रकाशन, 2017.
8. गौतम, सुमन. हिंदी कहानी और जनवादी दृष्टिकोण. जयपुरः संस्कारनंदन प्रकाशन, 2019.
9. यादव, चंद्रप्रकाश. समकालीन कथा और सामाजिक परिवर्तन. दिल्लीः प्रभात प्रकाशन, 2020.
10. शर्मा, योगेश. जनसरोकार और हिंदी साहित्य. दिल्लीः राजपाल एंड संस, 2021.